अध्याय 1

बाइबल

नाविक भयभीत थे। एक भयंकर तूफान उठा था और उनके कुछ मित्र डूब चुके थे। वे खो चुके थे और बहुत से अनुत्तरित प्रश्नों ने उन्हें परेशान किया। वे कहां जा रहे थे? यह यात्रा कितनी लम्बी होगी, क्या वे कभी घर पहुंच पायेंगे?

यह घटना १४९२ की है और इन लोगों का कप्तान क्रिस्टोफर कोलम्बस कोई उत्तर नहीं दे सका। वह उन्हें बिना किसी रूपरेखा तैयार किये हुए अटलाँटिक महासागर के पार भारतवर्ष की खोज में ले गया था। इसके बदले वह अमेरिका के एक द्वीप में पहुंचा। वहां उसे और उसके नाविकों को ताजा जल प्राप्त हुआ। और उनका जीवन बच गया।

ऐसी कहानी का दुहराव फिर न हो। इसके लिए जहाज के कप्तानों को सही रूपरेखा एवं मानचित्रों की आवश्यकता है जिससे वे अपना मार्ग न खो सकें।

भूमि पर रहते हुए भी बहुत से लोग अपने को तूफानी महासागर में खोया हुआ अनुभव करते हैं। वे अपने आप से ही प्रश्न करते हैं। मैं कहां जा रहा हूं? क्या मैं खो गया हूं? क्या मैं कभी सही मार्ग प्राप्त कर सकूंगा? परमेश्वर ने हमारे प्रश्नों को सुना है और उसने पहले ही एक पुस्तक हमारे जीवन के मार्ग दर्शन के लिये दी है।

उत्तर की खोज करने से पहले आइये इस महान पुस्तक पर विचार करें। हम देखेंगे कि यह कैसे लिखी गयी एवं हमें कैसे दी गयी।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे...

बाइबल की उत्पत्ति और संरचना

बाइबल का अभिप्राय

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप...

- बाइबल की उत्पत्ति एवं संरचना का वर्णन कर सकें।
- समझ सकें कि बाइबल कैसे और क्यों दी गई।

बाइबल की उत्पत्ति एवं संरचना

उद्देश्य १. बाइबल की उत्पत्ति एवं मौलिक संरचना का वर्णन करें।

पवित्र बाइबल ६६ पुस्तकों का संग्रह, एक छोटे पुस्तकालय के समान है जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है। बाइबल का प्रथम भाग पुराना नियम — ३९ पुस्तकों का है। दूसरा भाग — नया नियम — २७ पुस्तकों का है।

पूर्ण बाइबल लगभग १६०० वर्ष में तैयार हुई है। ४० व्यक्तियों का हाथ इसके लिखने में है। बाइबल बताती है कि ये लोग परमेश्वर के पवित्र जन थे। ये राजा, किसान, कवि, व्यापारी, सैनिक एवं धार्मिक अगुवे थे। वे विभिन्न पृष्ठभूमि, विभिन्न शहरों और विभिन्न रुचियों के थे।

बाइबल की पुस्तकों में कई विभिन्न विषय जैसे इतिहास, भविष्यवाणी एवं काव्य हैं। इसमें गीत एवं बुद्धि की बातें जो नीतिवचन कहलाती है सम्मिलित हैं। इसकी कहानियां जवानों तथा बूढ़ों के लिये रुचिकर हैं तथापि सभी एक दूसरे से मेल खाती हैं, क्योंकि सभी का एक केन्द्रीय विषय है — परमेश्वर एवं मनुष्य के बीच का सम्बन्ध।

जो आपको करना है

इसमें से प्रत्येक "जो आपको करना है" अनुच्छेदों के प्रश्न या अभ्यास आपको पुनरवलोकन तथा जो आप पढ़ चुके हैं के प्रयोग में सहायक होंगे।

१ निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिये।

अ. बाइबल .... पुस्तकों से बनी है। जो कि ... व्यक्तियों के द्वारा लिखी गई है।

ब. बाइबल .... वर्ष में तैयार हुई।

स. प्रथम भाग में .... पुस्तकें हैं जो कि .... नियम कहलाती हैं और दूसरे भाग में .... पुस्तकें हैं जो कि .... नियम कहलाती हैं।

इस पाठ के अन्त में दिये गये उत्तरों के आधार पर इसकी जांच कर लें।

बाइबल का अभिप्राय

उद्देश्य २. ईश्वरीय प्रेरणा के पहलुओं की पहचान करें।

शायद आपने ध्यान दिया होगा कि इस पाठ के प्रथम भाग में एक परस्पर-विरोध प्रतीत होता है। यह कहता है कि परमेश्वर ने हमें बाइबल दी है किन्तु यह भी कहता है कि मनुष्य ने इसे लिखा है। यह कैसे हो सकता है?

जिन ४० व्यक्तियों ने बाइबल को लिखा उनमें ईश्वरीय प्रेरणा थी। इसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा ने लेखकों के दिमाग में वे विचार डाले जो परमेश्वर चाहता था।

दूसरा तीमुथियुस ३:१६ कहता है, "हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।" यह पद यह भी कहता है कि बाइबल क्यों दी गई — उपदेश, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।

परमेश्वर ने हमें सही जीवन व्यतीत करने का निर्देश दिया है। क्योंकि वह हमारी अत्यधिक भलाई चाहता है। वह जानता है कि जब हम उसके सिद्धान्तों के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं करते तो हम स्वयं को चोट पहुंचाते हैं। हमारा दिमाग, हमारी देह और विशेषकर हमारी आत्मा दुःख उठाती है। अपने को चोट लगने से बचाये रखने का उत्तम रास्ता यह है कि उसके वचन का निकटता से अनुसरण करें। इसके द्वारा हमें उसका ज्ञान प्राप्त होता, वह जानता है कि उसके मार्ग हमारे लिये उत्तम है।

एक चार्ट या मार्ग दर्शन-पुस्तक के समान उसका वचन हमारे लिये लिखा गया ताकि सहायता एवं बल प्राप्त करने के लिये इसकी ओर मुड़ सकें। कितना अद्‌भुत है कि उसके व्यक्तिगत निर्देशनों को हम हमेशा अपने पक्ष में प्राप्त कर सकते हैं।

• • •

जो आपको करना है

अगले दो अभ्यासों में उस अक्षर के चारों ओर जिसके शब्द अच्छी तरह वाक्य पूरा करते हैं एक वृत्त खींचिए।

२ जब हम कहते हैं कि बाइबल ईश्वर की प्रेरणा से लिखी गई तो हम यह स्पष्ट करते हैं कि ......

अ. यह हमें परमेश्वर के बारे में बताती है।

ब. परमेश्वर ने लेखकों को वे विचार दिये जो उन्हें लिखना था।

स. इसमें बहुमूल्य धार्मिक इतिहास निहित है।

३ लेखकों ने एक ही विषय पर लिखा और परस्पर विरोध नहीं किया क्योंकि

अ. परमेश्वर वास्तविक लेखक था और उन्होंने वही विचार लिखे जो उसने उन्हें दिये।

ब. प्रत्येक ने अपने बाद आने वाले लेखकों के लिये निर्देशन छोड़े।

४ परमेश्वर ने हमें बाइबल क्यों दी इसके सही कारण के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींचिए।

अ. वह हमारी सर्वोत्तम भलाई चाहता है।

ब. वह सही जीवन यापन के लिए निर्देश देना चाहता था।

स. वह हमें यह महसूस कराना चाहता था कि वह इतना अधिक महान है कि हम उसे जानें।

ड. वह अपना सम्बन्ध हमारे साथ स्थापित करना चाहता है, और बताना चाहता है कि वह कैसा है।

अपने उत्तरों की जांच करें

आपके अध्ययन अभ्यासों के उत्तर सामान्य क्रम में नहीं दिये गये हैं। वे मिला दिये गये हैं ताकि आप अपने अगले प्रश्न का उत्तर समय से पहले न देख सकें। पहले से देखने की कोशिश न करें।

१ अ. $\frac{६६}{४०}$

ब. १६००

स. ३९

पुराना

२७

नया

३. अ. परमेश्वर वास्तविक लेखक था और उन्होंने वही विचार लिखे जो उसने उन्हें दिये।

२. ब. परमेश्वर ने लेखकों को वे विचार दिये जो उन्हें लिखने चाहिये थे।

४. अ. वह हमारी सर्वोत्तम भलाई चाहता है।

ब. वह सही जीवन यापन के लिये निर्देश देना चाहता था।

ड. वह अपना सम्बन्ध हमारे साथ स्थापित करना चाहता है और बताना चाहता है कि वह कैसा है।

आपके टिप्पणी लिखने के लिये